नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305
इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेला उदघाटित

वाचन संस्कृति के विकास के लिए पुस्तक मेला आवश्यक - सांसद रामदास तडस

देशभर के 70 से अधिक प्रकाशक हुए शामिल, पांच दिनों तक चलेगा पुस्तक मेला

वर्धा, 4 फरवरी 2018 : वाचन संस्कृति का विकास करने के लिए पुस्तक मेले का आयोजन आवश्यक है। विश्वविद्यालय में आयोजित पुस्तक मेले का लाभ वर्धा जिले के हर विद्यार्थी और

शिक्षकों और पुस्तक प्रेमियों को लेना चाहिए। उक्त विचार वर्धा लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री रामदास तडस ने व्यक्त किये।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 4 से 8 फरवरी के दौरान आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उदघाटन वर्धा लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री रामदास तडस के हाथों किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की।

विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ भवन के प्रांगण में रविवार, 4 फरवरी को मेले

का उदघाटन सांसद रामदास तडक द्वारा फीता काटकर किया गया। उदघाटन के बाद उन्होंने

सभी स्टॉल का निरीक्षण किया तथा कुछ किताबें खरीदी। उदघाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवि श्री हरिराम द्विवेदी, वाराणसी, कुलसचिव कादर नवाज खान, मेले के संयोजक डॉ. बीर पाल सिंह यादव, सहसंयोजक डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अप्रमेय मिश्र ने किया तथा आभार कुलसचिव कादर नवाज खान ने माना। इस अवसर पर प्रकाशक, शिक्षक, विद्यार्थी तथा पुस्तक प्रेमियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

दीप प्रज्ज्वलन कर मेले का औपचारिक उदघाटन किया गया। इस अवसर पर सांसद तडस ने

कहा कि इस प्रकार के पुस्तक मेले का प्रचार-प्रसार लोगों में बडे पैमाने पर होना जरूरी है ताकि लोगों को अपनी पसंद की किताबें मिल सके। ज्ञान वृद्धी के साथ-साथ पुस्तकों के प्रति आकर्षण बढाने के लिए पुस्तक मेला जरूरी है और इसके लिए मैं हिंदी विश्वविद्यालय को बधाई देता हू कि उन्होंने देशभर के प्रकाशकों को गांधी और विनोबा की कर्मभूमि वर्धा में बुलाया। उन्होंने पुस्तक मेले के प्रति खुशी का इजहार करते हुए कहा कि वर्धा एक ऐतिहासिक शहर है और यहां गांधी-विनोबा के विचार और चिंतन की छाप है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से वर्धा का नाम देश और दुनिया में लिया जाने लगा है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के काल से मैं जुडा हुआ हू और आज देखता हूं कि 20 वर्ष पहले लगाया गया पौधा आज बड़े वृक्ष में विकसित हो रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की चर्चा संसद में और सांसदों में भी होती रहती है और इससे

मैं गौरवान्वित महसूस करता हूं। इस अवसर पर उनके हाथों विश्वविद्यालय की शोधार्थी हुस्न तबस्सुम 'निहां' के उपन्यास फिरोजी आँधियां' का लोकार्पण किया गया।

उदघाटन समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र उपस्थित नहीं हो सके। उन्होंने अपना संदेश भेजा जिसका वाचन डॉ. बीर पाल सिंह यादव ने किया। अपने संदेश में कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि पुस्तक की दुनिया हमें सदैव आकर्षित करती रही है और पुस्तकों के करीब आने से अकादमिक तमीज और तहजीब दोनों में फर्क आता है। उनके जैसा दोस्त नहीं होता। ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार में उनका कोई सानी नहीं। हमारे देश के सार्जनिक जीवन में उत्कृष्ट योगदान करने वाले जन नायकों ने अनेक पुस्तकों से प्रेरणा ली है और उनका प्रणयन भी किया है। उन्होंने आगे कहा कि आज पुस्तकों का रूप बदल रहा है। छपी पुस्तकों की जगह दृश्य पुस्तकों (ई बुक) का चलन बढ़ रहा है पर छपी पुस्तकों का अपना आकर्षण और अपनी खुशबू होती है। हमें विश्वास है यह मेला पुस्तक संस्कृति के पुनरुज्जीवन में और उसके साथ विचार की संस्कृति के उन्नयन में सहायक होगा। मेले में पहुंचे सभी प्रकाशकों का उन्होंने हार्दिक स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि पुस्तकें अच्छी दोस्त होती है और वह किसी भी यात्रा का सफल बनाती है चाहे वह जीवन की ही क्यों न हो। पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पिछले आठ वर्षों से विश्वविद्यालय पुस्तक मेले का आयोजन कर रहा है और अब तक के आयोजनों से यह काफी बड़ा आयोजन है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि लोगों के चिंतन को बदलने में यह पुस्तक मेला कामयाब साबित होगा। इस अवसर पर उन्होंने सांसद तडस को 'विश्व मिथक क्षीरसागर' पुस्तक भेंट की। सांसद तडस ने भी स्वामी विवेकानंद के विचारों पर लिखी 'न भूतो न भविष्यती' पुस्तक खरीदी। उन्होंने जनसंपर्क विभाग के स्टॉल पर जाकर वहां अतिथि पुस्तक पर अपनी भावनाएं लिखित रूप में व्यक्त की। विशिष्ट कवि हरिराम द्विवेदी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में अध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी, प्रकाशक, पुस्तक प्रेमी तथा वर्धा के गणमान्य नागरिक बडी संख्या में उपस्थित थे।

हिंदी विश्वविद्यालयात पाच दिवसीय राष्ट्रीय ग्रंथ प्रदर्शनाचे उदघाटन

वाचन संस्कृतीच्या विकासासाठी ग्रंथ प्रदर्शन आवश्यक – खासदार रामदास तडस

देशभरातील 70 प्रकाशकांचा सहभाग, पाच दिवस वाचकांना पर्वणी

वर्धा, 4 फरवरी 2018 : वाचन संस्कृतीच्या विकासाकरिता ग्रंथ प्रदर्शनाचे मोठे महत्व असून विश्वविद्यालयात लावलेले हे प्रदर्शन वाचकांना पर्वणी ठरेल असे उदगार वर्धा लोकसभा क्षेत्राचे खासदार श्री रामदास तडस यांनी काढले.

महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा येथे 4 ते 8 फेब्रुवारी दरम्यान आयोजित राष्ट्रीय ग्रंथ प्रदर्शनाचे उदघाटन वर्धा लोकसभा क्षेत्राचे खासदार श्री रामदास तडस यांच्या हस्ते रविवारी करण्यात आले. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विश्वविद्यालयाचे प्रकुलगुरु प्रो. आनंद वर्धन शर्मा होते. विश्वविद्यालयाच्या अनुवाद व निर्वचन विद्यापीठ भवनाच्या प्रांगणात रविवार, 4 रोजी फीत कापून करण्यात आले. उदघाटनानंतर खासदार तडस यांनी सर्व स्टॉलचे निरीक्षण केले आणि काही पुस्तकांची खरेदीही केली. यावेळी विशिष्ट अतिथी म्हणून श्री हरिराम द्विवेदी, वाराणसी, कुलसचिव कादर नवाज खान, संयोजक डॉ. बीर पाल सिंह यादव, सहसंयोजक डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. अप्रमेय मिश्र यांनी केले तर आभार कुलसचिव कादर नवाज खान यांनी मानले.

दीप प्रज्ज्वलनाने प्रदर्शनाचे औपचारिक उदघाटन करण्यात आले. खासदार तडस म्हणाले की ग्रंथ प्रदर्शनाचा प्रचार-प्रसार लोकांमध्ये मोठया प्रमाणात व्हायला पाहिजे. ज्ञानात भर घालण्यासाठी तसेच नवनवीन ज्ञान ग्रहण करण्यासाठी ग्रंथ प्रदर्शन महत्वाचे ठरते. विश्वविद्यालयाने हे पाऊल उचलून त्यांनी देशभरातील प्रकाशकांना गांधी आणि विनोबांची कर्मभूमी वर्धा येथे निमंत्रित केले. ते म्हणाले की वर्धेला ऐतिहासिक महत्व आहे आणि येथे गांधी-विनोबांच्या विचार व चिंतनाची छाप आहे. या विश्वविद्यालयाच्या स्थापनेपासून मी साक्षीदार राहिलेलो असून 20 वर्षाआधी लावलेले रोपटे वटवृक्षात परिवर्तीत होतांना पाहून आनंद वाटतो, असेही ते म्हणाले. विश्वविद्यालयाची चर्चा संसद सदस्य आणि संसदेमध्येही होत असते, त्यामुळे मी गौरवान्वित होत असतो. हिंदीच्या प्रसारात विश्वविद्यालयाचे मोठे योगदान असल्याचे त्यांनी अधोरेखित केले. यावेळी शोधार्थी हुस्न तबस्सुम 'निहां' यांच्या 'फिरोजी ऑंधियां' या कादंबरीचे लोकार्पण तडस यांच्या हस्ते करण्यात आले.

प्रो. गिरीश्वर मिश्र यांचा संदेश वाचून दाखविण्यात आला. ते म्हणाले, पुस्तकांची दुनिया सदैव आकर्षित करत असते. पुस्तकासारखा दोस्त कोणताही नाही. ज्ञानाचे संरक्षण, संवर्धन व प्रसारात

पुस्तकांचा पर्याय नाही. पुस्तकांमुळेच महान नायक तयार झाले आहेत. आज पुस्तकांचे रूप बदलले आहे. छापील पुस्तकांची जागा दृश्य पुस्तकांनी (ई बुक)ने घेतली आहे. परंतु छापील पुस्तकांचे आकर्षण आणि सुगंध अजूनही कायम आहे. विचारांच्या संस्कृतीला प्रोत्साहन देण्यासाठी ग्रंथ प्रदर्शन मोलाचे ठरेल असेही ते म्हणाले.

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा म्हणाले की ग्रंथ हे मित्रासमान आहेत. कोणताही प्रवास मग तो जीवनाचा का असेना यशस्वी होण्यासाठी ग्रंथ उपयोगी ठरतात. गेल्या आठ वर्षांपासून विश्वविद्यालयात पुस्तक प्रदर्शनाचे आयोजन होत आहे आणि या वर्षीचे आयोजन आतापर्यंतचे सर्वांत मोठे आहे असेही ते म्हणाले. लोकांचे चिंतन बदलण्यासाठी पुस्तक प्रदर्शन यशस्वी ठरेल असा विश्वास त्यांनी व्यक्त केला. त्यांनी खासदार रामदास तडस यांना 'विश्व मिथक क्षीरसागर' पुस्तक भेट दिले. खा. तडस यांनी स्वामी विवेकानंदांच्या विचारांवरील 'न भूतो न भविष्यती' पुस्तक खरेदी केले. त्यांनी जनसंपर्क विभागाच्या स्टॉल वर अतिथी पुस्तकात आपल्या भावना लिखित रूपाने व्यक्त केल्या. कवि हरिराम द्विवेदी यांनीही विचार मांडले. यावेळी अध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी, प्रकाशक, पुस्तक प्रेमी तथा वर्धेचे गणमान्य नागरिक मोठया संख्येने उपस्थित होते.